आरती श्री सूर्यनारायण जी की

जय जय जय रविदेव, जय जय जय रविदेव ।
रजनीपति मदहारी, शतदल जीवनदाता ।
षटपद मन मुदकारी, हे दिनमणि ताता।
जग के हे रविदेव, जय जय जय रविदेव ।
नभमण्डल के वासी, ज्योतिप्रकाश देवा ।
निज जनहित सुखरासी, तेरी हम सब सेवा ।
करते हैं रविदेव, जय जय जय रविदेव ।
कनक बदन महं सोहत, स्रचि प्रभा प्यारी ।
निज मंडल से मंडित, अजर अमर छवि धारी ।
हे सुरवर रविदेव जय जय जय रविदेव ।

।। श्री सूर्य स्तुति ।।

नमः सवित्रे जगदेक चक्षुषे
जगत्प्रसूति स्थितिनाश हेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे
विरंचि नारायण शंकरात्मने ।।

विवरण

जो अन्धकार को हरने वाले हैं तथा हमारे पापों का नाश करने वाले हैं, ऐसे सौ दल वाले जीवन दाता रविदेव की जय हो । ये दिन केमणि रवि देव का मन हमेशा प्रसन्नचित रहता है । सम्पूर्ण आकाश में इनका वास रहता है तथा चारों तरफ ज्योति फैलाने वाले देव हैं ।

अपने सेवकों का हित करने वाले तथा सभी प्रकार सुख देनेवालें हैं । इनकी सेवा हम सभी करते हैं । प्रातः काल में आपके स्वर्ण के समान शरीर की दीप्ति बड़ी ही प्यारी लगती है । आप अपने ही मंडल से घिरे हुए रहते हैं तथा आपकी ये चिरस्थायी छवि मन को बल देने वाली

है । हे देवाधिदेव ! सूर्यदेवता ! हम
आपकी जय-जयकार मनाते हैं ।

श्री सूर्य स्तुति

जो जगत के एक मात्र नेत्र (प्रकाशक) हैं, संसार की उत्पति, स्थिति और नाश के कारण हैं, उन वेदत्रयी स्वरूप, सत्वादि तीनों गुणों के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और महेश नामक तीन रूप धारण करने वाले सूर्य भगवान को नमस्कार है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.